Dr Anshu Pandey
Assistant Professor
History department

UNIT – 3
यूरोप में आर्थिक विकास

मर्केंटिलिज़्म : व्यापारिक पूँजीवाद, उपनिवेशवाद और राज्य की आर्थिक भूमिका

सामंती व्यवस्था के पतन के बाद यूरोप में व्यापार और वाणिज्य का असाधारण विस्तार हुआ। भौगोलिक खोजों ने यूरोप को विश्व अर्थव्यवस्था के केंद्र में ला दिया। अमेरिका से प्राप्त सोना-चाँदी, एशिया से मसाले और अफ्रीका से दास व्यापार ने यूरोप की आर्थिक शक्ति को अभूतपूर्व रूप से बढ़ाया।

इस पृष्ठभूमि में मर्केंटिलिज़्म का उदय हुआ। यह केवल एक आर्थिक नीति नहीं, बल्कि एक राज्य-केन्द्रित आर्थिक दृष्टिकोण था। मर्केंटिलिज़्म के अनुसार राष्ट्र की शक्ति उसके धन संचय में निहित है। इसलिए राज्य को व्यापार नियंत्रित करना चाहिए, निर्यात को बढ़ावा देना चाहिए और आयात को सीमित करना चाहिए।

राज्य ने व्यापारिक कंपनियों को एकाधिकार प्रदान किया, उद्योगों को संरक्षण दिया और उपनिवेशों का विस्तार किया। उपनिवेश कच्चे माल के स्रोत और तैयार माल के बाज़ार बने। इससे यूरोप में व्यापारिक पूँजी का तीव्र संचय हुआ।

हालाँकि मर्केंटिलिज़्म ने राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं को मजबूत किया, लेकिन इसने उपनिवेशों का आर्थिक शोषण किया और वैश्विक असमानता को जन्म दिया। यह प्रणाली आगे चलकर औद्योगिक पूँजीवाद का आधार बनी।